© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 09 , Issue : 03 | July - September 2022

वर्तमान और पक्षपात रहित शिक्षा

डॉ. रमेश चन्दर (सहायक प्राद्यापक हिन्दी –शिक्षण)

कस्तूरी राम कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन नरेला नई दिल्ली

परिचय

व्यावसायिक शिक्षा एक प्रारंभिक शिक्षा है जिसका लक्ष्य है के लिए आवश्यक पद प्राप्त करने, उत्पन्न करने और विकसित करने पर ज्ञान, क्षमता और गुणवत्ता। पद का जॉब ओरिएंटेशन शिक्षा स्पष्ट और व्यावहारिक है। ले जाने की प्रक्रिया में नौकरी शिक्षा से बाहर, हमें हमेशा की जरूरतों का पालन करना चाहिए वास्तविक कार्य और पद की आवश्यकताएं। गैर–विनाशकारी परीक्षण विशेषता एक अत्यधिक व्यावहारिक विशेषता है, और व्यावहारिक शिक्षण पेशेवर में निर्णायक भूमिका निभाता है शिक्षण। व्यावहारिक शिक्षण का कार्यान्वयन गैर–विनाशकारी परीक्षण विशेषता की प्रणाली कुंजी है और वोकेशनल के शिक्षण सुधार में मुश्किल बिंदु शिक्षा। ठोस बिछाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपाय है कुशल कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए नींव, और एक छात्रों के पद में सुधार के लिए महत्वपूर्ण शिक्षण कड़ी क्षमता और एक व्यवस्थित, व्यापक, पोस्ट में कार्मिक प्रशिक्षण की कुशल और लागू गुणवत्ता शिक्षा।

प्रस्तावना

प्रजातंत्रा में नागरिकों द्वारा ही शासन किया जाता है तथा वे नागरिकता का मार्ग दर्शन करते हैं और जीवन वेफ विभिन्न क्षेत्राों में नेतृत्व प्रदान करते हैं। उन्हें शिक्षा भी देते हैं। देश में सभी को शिक्षा प्राप्त करने का अध्किार है परन्तु यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्राथमिक कक्षाओं की पाँचवी कक्षा में कितने प्रतिशत पास कर पाते हैं और उसवेफ बाद उनमें से माध्यमिक की आठवीं कक्षा को कितने प्रतिशत पास कर पाते हैं। पास करने वालो में से कितने हाई स्वूफल की परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। इस प्रकार इण्टर, स्नातक तथा परास्नातक परीक्षाओं में प्रतिशत बहुत कम होता जाता है। विद्यार्थी परीक्षाओं द्वारा छंटते जाते हैं। उच्च शिक्षा ग्रहण करने वालों का प्रतिशत बहुत कम होता है। यही व्यक्ति नेतृत्व तथा मार्ग दर्शन देने में सक्षम होते हैं। अन्य पदों वेफ लिये परीक्षाओं की व्यवस्था है। इस प्रकार प्रजातंत्रा में शिक्षा एक छलनी का कार्य करती है। इस प्रकार शिक्षा एक प्रक्रिया एवं प्रशिक्षण वेफ अतिरिक्त अन्य विषयों की भाँति एक अध्ययन का स्वतंत्रा अनुशासन भी है। शिक्षा विषय को 'कला' तथा 'विज्ञान' दोनों ही माना जाता जो विशिष्ट बालकों पर लागू होता है। यह शिक्षा शारीरिक, मानसिक और प्रतिभाशाली अथवा विशिष्ट गुण सम्पन्न बालकों वेफ लिए अपनायी जाती है। विशिष्ट

शिक्षा का इतिहास का क्षेत्रा दीर्घ है। जाति व्यवस्था का प्रचीन काल में स्वीकृत आधार शिक्षा वेफ प्रत्यय से सम्बन्धित है। प्राचीन काल से ब्राह्मण शिक्षा वेफ क्षेत्रा में और क्षत्रिाय यु(क्षेत्रा में निपुण माने जाते हैं। इसी प्रकार वैश्यों एवं शूद्रों वेफ प्रशिक्षण भी उनवेफ कार्य क्षेत्रा वेफ अनुरूप अलग–अलग थे। इस प्रकार का वर्गीकरण मूल रूप से विभिन्न प्रतिभाओं वेफ मनुष्यों को भिन्न–भिन्न श्रेणियों में रखने वेफ दृष्टिकोण से किया गया था। छात्राों की प्रतिभाओं को माता–पिता अथवा अध्यापकगण पहचानते थे, जो उन्हें शिक्षण प्रविध्यिों में भी विशिष्ट बालकों की शिक्षा वेफ क्षेत्रा में इसी प्रकार की प्रक्रियाओं का अनुसरण किया जाता है। शिक्षाविद् सामान्य तथा शारीरिक रू‘ से बाध्ति बालकों पर विशेष ध्यान देने वेफ कारण विशिष्ट बालकों की आवश्यकता पर कम ध्यान दे पाते हैं। विशिष्ट शिक्षा वेफ बारे में विभिन्न विचार विवादास्पद हैं। ये विचार बालकों की शिक्षा की मुख्यधरा से भिन्न हैं। जिसवेफ कारण विशिष्ट बालकों को विशेष तथा अध्कि अवसर प्रदान करने वेफ पक्ष में है। साधरणतः यह समझा जाता है कि विशिष्ट शिक्षा सम्पूर्ण कार्यक्रम नहीं है जो सामान्य बालकों की शिक्षा से सर्वथा भिन्न है। इस क्षेत्रा में शिक्षा वेफ ऐसे घटक भी सम्मिलित हैं, जो सभी बालकों वेफ कार्यक्रमों वेफ साथ–साथ विशिष्ट भी हैं। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे वुफछ विकसित देशों में इस प्रकार की शिक्षण संस्थाएँ अध्कितर आवासीय शिक्षण विद्यालयों वेफ रूप में कार्यरत हैं। परन्तु भारत जैसे विकासशील देश में आवासीय शिक्षण संस्थायें सामान्यत नहीं दिखाई देतीं। इस प्रकार वेफ बालकों की सुविधओं को ध्यान में रखते हुए भारत वेफ महानगरों में ऐसी शिक्षा संस्थाओं पर अब ध्यान दिया जा रहा है।

किसी भी कार्य को करने से पहले उसके उद्देश्य की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। इसी प्रकार शिक्षा प्राप्ति पूर्व उसके उद्देश्य का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। अतः शिक्षा के उद्देश्य की अत्यन्त आवश्यकता होती अथवा है। यदि शिक्षा के उद्देश्य का सही ज्ञान शिक्षक और शिक्षार्थी को नहीं हुआ तो स्थिति अत्यन्त भयावह हो सकती है। डॉ. बी.डी. भाटिया के शब्दों में ”उद्देश्य के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है, जिसे अपने लक्ष्य या मंजिल का ज्ञान नहीं और विद्यार्थी उस पतवारहीन नौका के सदृश है, जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाती हुई तट की ओर बहती रहती है। ”इस प्रकार उद्देश्य रहित शिक्षा निरर्थक है। प्रत्येक काल में शिक्षा के उद्देश्य उस देश के जीवन के आदर्शों पर आधारित रहे हैं। अरस्तू ने ठीक ही लिखा है ”इस विषय में मतैक्यता नहीं है कि बालक को क्या सीखना चाहिए। प्रो. हार्नी के अनुसार ”शिक्षा का कोई अन्तिम उद्देश्य नहीं है जो छोटे–छोटे उद्देश्य को शासिल करें। अन्त में जान डी०वी० का कथन ज्यादा सही प्रतीत होता है कि शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं हैं वरन जीवन यापन की प्रक्रिया है।

वर्तमान भारत के लिए शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य वर्तमान समय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय परिवेश में शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए।

1. ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य प्राचीन काल से ही यह शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है। साधारणजनों ने शिक्षा को सदा इसी रूप में ग्रहण किया है। अनेक शिक्षाशास्त्रियों ने भी इसे एक उद्देश्य माना है। व्यापक रूप में हम यह कह सकते हैं कि किसी भी रूप में जो कुछ सीखा जाता है, वह ज्ञान ही है। यदि हम अपने जीवन की ओर देखें, तो ज्ञात होगा कि ज्ञान की आवश्यकता हमें पग–पग पर पड़ती है।

2. जीविकोपार्जन का उद्देश्य अनेक विद्वानों का मानना है कि जीविकोपार्जन शिक्षा को सर्वप्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। कुछ विद्वानों को तो यहाँ तक मानना है कि जो शिक्षा हमारे आर्थिक जीवन के लिए उपयोगी नहीं है, वह व्यर्थ है। अन्न एवं वस्त्रहीन व्यक्ति को ऐसी शिक्षा देना जो उसकी सबसे बड़ी समस्या को सुलझाये बिना छोड़ दे एक प्रकार का मानसिक व्यभिचार है। थोथे आदर्शवाद से प्रेरित होकर हम भले ही आर्थिक दृष्टिकोण की उपेक्षा करने लगें, पर कोई भी पक्षपातरहित व्यक्ति इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि आर्थिक समस्या हमारी सबसे बड़ी समस्या है। शिक्षा का कोई भी सम्बन्ध यदि जीवन को अधिक सफल सुखमय बनाने से हैं, तो उसे जीविकोपार्जन के साधन सुलभ कराने ही होंगे।

3. अच्छी नागरिकता की शिक्षा का उद्देश्य वर्तमान भारत के लिए जरूरी है कि हम अच्छे नागरिक बनें। शिक्षा का कार्य है छात्रों में ऐसे गुणों को पैदा करना तथा उन्हें ऐसे अनुभव प्रदान करना, ताकि वे वास्तविक जीवन में समाज के उपयोगी सदस्य बनकर रह सकें। एक नागरिक के रूप में हमारे कुछ अधिकार और कर्तव्य है। शिक्षा हमें वह योग्यता प्रदान करती है, जिसके आधार पर हम इन कर्तव्यों और अधिकारों को पहचान सकें।

4. अवकाश सदुपयोग के लिए शिक्षा– शिक्षा के द्वारा हम केवल अधिक कुशलतापूर्वक जीविकोपार्जन ही नही करते, अपितु अपने खाली या अवकाश के समय का ठीक प्रयोग करना भी सीखते हैं। इस मत के समर्थकों का यहाँ तक कहना है कि शिक्षा की वास्तविक उपयोगिता जीविकोपार्जन में न होकर अवकाश में है। शिक्षा का उद्देश्य वह तरीका सिखाना है, जिससे कि हम अपने अवकाश के समय को भली भांति बिता सकै ।

5. शारीरिक स्वास्थ्य का विकास– स्वस्थ नागरिक ही देश की सुरक्षा एवं सेवा की आधारशिला होते हैं। भारतीयों का स्वास्थ्य गिरा हुआ है अतः विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा का निश्चित कार्यक्रम होना आवश्यक है।

6. चारित्रिक निर्माण एवं विकास– वर्तमान भारत में विभिन्न कारणों से नागरिकों का चारित्रिक पतन होता जाता है अतः शिक्षा अन्तर्गत चरित्र निर्माण को सम्मिलित करना आवश्यक है। नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र का विकास न होने से देश को अनेक समस्याओं एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

भारत में सामाजिक असमानता के स्तर के बारे में सब जानते है, और स्कूल एवं कक्षा में भी यह असमानता अध्यापकों तथा विद्यार्थियों द्वारा लाई जाती है। भाषा, जाति, धर्म, लिंग, स्थान, संस्कृति और रिवाज जैसे सामाजिक अंतर के पक्षपात पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाए जाते हैं। बच्चे का लिंग, आर्थिक वर्ग, स्थान और जातीय पहचान काफी हद तक यह पहचान करवा देते हैं कि बच्चा किस तरह के स्कूल में पढ़ेगा, स्कूल में उसे किस तरह के अनुभव मिलेंगे और शिक्षा प्राप्त करके वे क्या लाभ प्राप्त कर सकेगा। आज के समय में जब कक्षाओं में विविध परिवेशों से आने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है और इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हैकि भेदभाव भूल कर, प्रत्येक बच्चे को समान शिक्षा देने की जिम्मेदारी उठाई जाए। औपचारिक स्कूली शिक्षा में समान, गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के लिए समानता और उत्कृष्टता सुनिश्चित करनाकिसी देश की शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा होता है, जिसमें अध्यापक दृ शिक्षा की प्रक्रिया का मुख्य सुविधादाता दृ किसी बच्चे की स्कूली शिक्षा से आरंभ हुई शिक्षा यात्रा को एक आकार देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

पिछले वर्षों में, भारत में इस बात को लेकर जागरुकता बढ़ी है कि सभी तरह की सामाजिक स्थिति वाले बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले। ऐसा बालिकाओंऔर विशेषकर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों, दिव्यांग, भाषायी, जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यक समूहों के बालक और बालिकाओं दोनों के मामले में है। भारत में लिंग असमानता के फलस्वरूप शिक्षा में असमान अवसर हैं, और जबकि इससे दोनों लिंगों के बच्चों पर प्रभाव पड़ता है, आंकड़ों के आधार पर बालिकाओं के मामले में सर्वाधिक अलाभकारी स्थिति है। बालकों के तुलना में बालिकाएं अधिक संख्या में स्कूल से निकल जाती हैं । ऐसा इसलिए है कि उन्हें पारंपरिक रूप से घरेलू कामकाज में हाथ बंटाना पड़ता है, उनका स्कूल तक जाना असुरक्षित समझा जाता है और उनकी माहवारी के समय स्कूलों में उनके लिए स्वच्छता आदि की सुविधाएं कम होती हैं। महिलाओं के प्रति लिंग संबंधी रूढ़िवादी धारणाओं के कारण उन्हें घर पर रहने को कहा जाता है औरफलस्वरूप बालिकाओंको स्कूल से निकाल लिया जाता है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में लैंगिक अंतर को दूर करने वाले मुद्दों पर यूनिसेफसरकार और भागीदारों के साथ काम करता है। वह यह भी सुनिश्चित करना चाहता है कि सभी बच्चे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करें, औरबालिकाओंऔरबालकों को अच्छी शिक्षा के समान अवसर मिलें।

निष्कर्ष

शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान ही शिक्षक की सफलता का एक महत्वपूर्ण रहस्य है। इस ज्ञान का सहारा लिए बिना व्यावसायिक जीवन की यात्रा समाप्त कर देनी पडती है। हमारा यह अकाट्य तर्क है कि मनोविज्ञान उसे अपने कर्तव्यों और दायित्वों का पालन करने में हर क्षण, हर घड़ी सहायता और मार्ग प्रदर्षन करता है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षक का मार्ग ही केवल कक्षागत शिक्षण के लिये प्रषस्त नही किया है बल्कि उसने शिक्षकों अभिभावकों, छात्रों एवं समाज में व्याप्त शैक्षिक समस्याओं को पहचान कर उनके निराकरण करने के लिये भी जागरूक किया है। उसने समायोजन की क्षमता भी विकसित की है, कार्य कुषलता का विकास भी किया है और नई पीढी के निर्माण में शिक्षक की भूमिका को भी सक्षम बनाया गया हम कह सकते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य वर्तमान समय में शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। आज के शिक्षाविद मानते हैं कि एक शिक्षार्थी के अंतर्निहित शक्तियों को उजागर करना उसको बाहर निकालना है और शिक्षार्थी सर्वांगीण अर्थात मानसिक, शारीरिक, भौतिक आदि सभी प्रकार से शिक्षार्थी को संपन्न सशक्त बनाना ही शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा का उद्देश्य समय के साथ दृ साथ बदलता रहा है। जब से मनुष्य ने शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा तब से उसे शिक्षा के उद्देश्य भी निर्धारित करने पड़े। बिना लक्ष्य या उद्देश्य के शिक्षा का कोई अर्थ नहीं था। शिक्षा के उद्देश्यध्उद्देश्यों का निर्माण वहां के समाज के आधार पर किया गया। जैसे–जैसे समय बदला शिक्षा के क्षेत्र में तथा उसके उद्देश्यों में भी परिवर्तन आते रहे। शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जिसके द्वारा मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है शिक्षा के द्वारा बच्चे के अच्छे चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षा की सहायता से बच्चों के सर्वांगीड़ विकास के लिए कई उद्देश्य बनाये गए जो समय के साथ–साथ बदलते रहे। बच्चे के सर्वांगीड़ विकास के लिए उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि के विकास की आवश्यकता पड़ती है जिस से हमारे देश का भी विकास होता है। अतः बालक एवं देश के विकास तथा समय की मांग के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य एवं लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कई उद्देश्यों की आवश्यकता पड़ती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ऐकरमैन, पीटर, एण्ड जैस डुवाल, ए फोर्स मोर पॉवरफुल : ए सेंचुरी ऑफ नॉनवाइलेंट कंफ्लिक्ट, न्यू यॉर्क, एस.टी. मार्टिन'स प्रेस 2000
- ऐकरमैन, पीटर, एण्ड क्रिस्टोफर क्रुएल्गर, स्ट्रैटेजिक नॉनवायलेंट कंफ्लिक्ट : द डायनामिक ऑफ पीपुल पावर इन द ट्वन्टीथ सेंचुरी, वेस्टपोर्ट: प्रेजर 1994

- ऐडम्क, जैड, गाँधी : नेक्ड एम्बिशन, लंदनः क्यूरसस, 2010
- अग्रवाल, श्रीमान नारायण, 'गाँधी एण्ड डिसेंट्रलाइजेशन ऑफ पॉलिटिकल पावर', इन क्षितिज रॉय (एड), गाँधी मिमोरियल पीस नम्बर, शांतिनिकेतन : विश्व भारती क्वार्टर्ली, 1949, पृ.177.83
- अग्रवाल, श्रीमान नारायण, गाँधियन कॉस्टीच्यूशन फॉर फ्री इण्डिया, इलाहाबाद, किताबिस्तान, 1976
- अलिन्सकन, सौल, रूल्स फॉर रेडिकल्स : ए प्राइमर फॉर रियलिस्टिक रेडिकल्स, न्यू यॉर्क, विन्टेज, 1972 अन्सब्टो, जॉन, जे., मार्टिन लूथर किंग, जूनियर : द मेकिंग ऑफ माइण्ड, मैरीनौल, न्यू यॉर्क : ओर्बिस, 1883 ऑस्टिन, ग्रानविले, द इण्डियन कंस्टीच्यूशन : कॉर्नरस्टोन ऑफ ए नेशन, ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ट यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966
- बालाशुब्रमन्यन, के. (कॉम्प), डायरेक्टरी ऑफ गाँधीयन कंस्ट्रक्शन वर्कर्स, न्यू डेल्ही, गाँधी पीस फाउण्डेशन, 1996
- अग्निहोत्री, प्रशान्त एवं रस्तोगी, धीरज कुमार. 2044. "ग्राम शिक्षा समितियों की भूमिका एवं उनका उत्तरदायित्व". परिप्रेक्ष्य वर्ष 48, अंक 3, दिसम्बर. पृ0 65–94.
- अग्रवाल, उमेश चन्द्र. 2006. "भारतीय आधुनिक शिक्षा के बदलते आयाम", भारतीय आधुनिक शिक्षाय वर्ष–24, अंक–4, अप्रैल, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली."अध्यापकों का राजनीतिकरण". सरिताय नवंबर द्वितीय पक्ष, 4973., पृ० 26–33.
- अफीफी, ट्रेसी ओ0, मोटा, एन., सरीन, जे0 एण्ड मैकमिलन, एच0एल0. 2047. "दि रिलेशनशिप्स बिटवीन हार्स फिजिकल पनिशमेंट एण्ड चाइल्ड मालट्रीटमेंट इन चाइल्डहुड एण्ड इंटीमेट पार्टनर वायलेंस इन एडल्टहुड", बीएमसी पब्लिक हेल्थ वा0–7, मई. पृ0 493–499.
- अरविन्द, गेसू. 2040. "कॉलोनिज्म, मॉडर्निज्म एण्ड नियो–लिबरलिज्म प्रॉब्लमेटाइजिंग एजूकेशन इंडिया". इन हैण्डबुक ऑफ एशियन एजूकेशन रू ए कल्चर पर्सप्रेक्टिव चेप्टर–28. राउटलेज, न्यूयॉर्क.
- अरविन्दो, 4948. ए श्स्टिमस ऑफ नेशनल एजूकेशन आर्या पब्लिशिंग हाउस, कलकत्ता.
- कर्वे, इरावती. 4953. किनशिप आर्गनाइजेशन इन इंडिया डेक्कन कॉलेज, पूना.
- कॉनर, डी0. 2046. "पैरेंट परसिप्शंस आन चाइल्ड केयर". चाइल्ड डेवलपमेंट इश्यू–59, नं0––24, 47 दिसम्बर. पृ0 24–23.